ग्रीन रिवोल्ट
हरित-नीरा रहे वसुंधरा

पेजः 4
चंपारण को बनाया सचमुच का चंपारण

रविवारीय 18-24 अगस्त 2019, संस्करण-1, अंक -2 | हिन्दी साप्ताहिक | R.N.I. No. JHAHIN 00962 | कुल पृष्ठ 4 | मूल्य 2 रूपये

लाखो रू हुये बर्बाद पर जल छाजन प्लांट नहीं बना, कांके डैम में बेकार लगी है लंबी पाइप

किस काम का है ये निर्माण?

-रांची :एक तरफ सरकार झारखंड में वाटर हार्वेस्टिंग के लिये लोगों को कह रही है दुसरी ओर खुद जल संरक्षण के नाम पर लाखो खर्च कर आधा अधूरा काम कर प्रोजेक्ट को छोड़ दे रही है। सालो पहले रातू रोड से कांके डैम में जाने वाले नालियों और गंदे जल को फिल्टर करके डैम में डालने के प्रोजेक्ट पर काम शुरू हुआ। इसके लिये कांके डैम में मोटे पाइपों को कतार में सीमेंट के खंभों पर बिछाया गया। और डैम में दो फिल्टर हाउस भी बनाये गये। लेकिन यह प्रोजेक्ट आधा अधूरा बन कर ठंढे बस्ते में चला गया। आज कांके डैम के बड़े हिस्से में यह पाइप बेकार में लगा हुआ है। पाइप और पिलर के कारण जल संचय में भी बाधा आ रही है। पिलरों के इर्द गिर्द गाद और झाड़ियां ऊग आयी हैं इससे डैम में जल संचय के लिये खुली जगह नहीं बन पाती।

रातू रोड की ओर से कांके डैम की ओर का एरिया ढलान लिये हुये है। और देवी मंडप रोड के नाले इस ढलान से होकर कांके डैम में जाकर मिल जाते हैं।

यह पूरा प्रोजेक्ट इसी गंदे जल को कांके डैम में सीधे मिलने से रोकने के लिये बना था। प्रारंभ में काम बहुत तेजी से हुआ। और मोटे मोटे पाइपों को लाकर डैम में फिट कर दिय गया। डैम के किनारे मैदानों में कई गहरे हौदे भी बनाये गये उनसे पाइप जोड़ कर उसे फिल्टर रूम तक ले जाना था। उसके पहले ही इस काम को एकाएक रोक दिया गया। आज भी वहां के घरों में निर्माण के लिये लाये गये विशाल पाइपों को देखा जा सकता है। एक मकान में तो इन विशाल पाइपों को हटाने में असमर्थ लोगों ने आंगन में ही छोड़ दिया और उस पर मिट्टी भर दी। अगर यह प्रोजेक्ट पूरा हो गया होता तो देवी मंडप रोड से होकर कांके डैम तक पहुंचने वाले नालों के गंदे जल को रोका जा सकता था। जो अब संभव नहीं दिखता। *पेज 3 भी देखें*

डैम में लगी है बेकार सीमेंट की पाइप

लंबे समय तक पता ही नहीं चला कि ये बन क्या रहा है?

जब दशक भर पहले डैम में पाइप बिछाया जा रहा था और उसके लिये वाइ शेप में सीमेंट के पिलर ढाले जा रहे थे तब पूछने पर भी ठेकेदार और इंजीनियर तक चुप्पी साध लेते थे।एक तय समय में पाइपों को फिट कर और कुछ गहरे हौदे बना कर ठेकेदार और इंजीनियर एकाएक गायब हो गये। हकीकत ये है कि आज भी इस आधे अधूरे काम को देख कर जानकार भी नहीं समझ पाते कि, ये निर्माण किस उद्देश्य से हो रहा था, और क्यों इसे छोड़ दिया गया?आज इन विशाल पाइपों पर कई बार बच्चों को चढ कर पार करते देखा जा सकता है जो खतरनाक है।

कुछ महिने पहले ही प्रदूषित जल के कारण हजारो मछलियां मरी थी।

प्रदूषित पानी और ऑक्सीजन कर कमी के कारण कुछ महिने पूर्व कांके डैम में हजारो मछलियां मर गयी थीं। इस डैम में सबसे ज्यादा अफ्रीकी मूल की तिलैपिया मछली पायी जाती है, जो कचड़े और शैवाल को खाकर रह लेती हैं। बरसात में भी डैम का पानी कुछ कुछ हरापन लिये हुये है और इससे बदबू आती है। कम बारिश के कारण कांके डैम में जल संचय अब तक समुचित मात्रा में नहीं हो पाया है। ज्ञात हो कि कांके डैम 1956 में जब से बना तब से आज तक एक बार भी इसकी सफाई नहीं हुयी है और इसके तल में गाद जमा हुआ है। कुछ साल पहले एक बार कुछ हिस्से में खुदाई कर इसे गहरा किया गया था।

पर्यावरण विषय पर प्रकाशित समाचार पत्र को सबों ने सराहा

सार्थक संवाद के बीच समाचार पत्र ग्रीन रिवोल्ट का हुआ लोकार्पण

रांचीः 15 अगस्त को रांची प्रेस क्लब में साप्ताहिक समाचार पत्र ग्रीन रिवोल्ट का लोकार्पण किया गया। लोकार्पण के मौके पर भुंगरू जल संरक्षण कार्यक्रम के श्री रथिन भद्रा, जाने माने पर्यावरणपिद और विज्ञान के राष्ट्रपति पुरस्कार सम्मानित प्राध्यापक डॉ. मंगला प्रसाद मिश्र, पशु चिकित्सक श्री भूषण प्रसाद, वरीय पत्रकार श्री एन के मुरलीधर उपस्थित रहे।सबों ने समाचारपत्र के विषय वस्तु की सराहना की।

मुख्य अतिथि जल संरक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण काम कर रहे रथिन भद्रा ने इसके विषय वस्तु को जान कर कहा कि, आज पर्यावरण के क्षेत्र में काम करने की बहुत आवश्यकता है। अन्यथा बीस साल बाद देश के कई दर्जन शहरों की स्थिति दक्षिण अफ्रिका के उन शहरों की तरह हो जायेगी जहां जल की कमी से पूरा शहर खाली करने की नौबत आ गयी है। रथिन भद्रा ने ये भी कहा कि, सड़क निर्माण के कारण उसके किनारे लगे हजारो पुराने पेड़ काट डाले गये। सरकार अगर ये शर्त रख दे कि पेड़ काटे नहीं जायेंगे बल्कि शिफ्ट किये जायेंगे तो आगे सड़क चौड़ीकरण के कारण वृक्षों की कटाई पर रोक लग जायेगी, सड़क निर्माण में लगी कंपनियां वैसी मशीनें उपयोग करने लगेंगी जो विशाल वृक्षों को उखाड़ कर वहां से शिफ्ट कर सकती हैं। उन्होंने पत्रिका के नाम को भी सराहा।

विशिष्ट अतिथि डॉ. मंगला प्रसाद मिश्र ने मौके पर उपस्थित भीड़ को देख कर प्रसन्नता व्यक्त करते हुये कहा कि, पूर्व में भी हम सभी बिना किसी स्वार्थ के वन, जल और पर्यावरण संरक्षण के कार्य में लगे रहे। और आज यहां यह संख्या देख कर हमें ये खुशी हो रही है कि, आम जन अब पर्यावरण की समस्या को समझ रहा है और उसके निदान को भी प्रयासरत है। आज हमें भविष्य को देखते हुये जल वन पर्यावरण संरक्षण के लिये मिलकर काम करना होगा। ग्रीन रिवोल्ट के प्रकाशन पर उन्होंने संतोष व्यक्त किया। पशु चिकित्सक डॉ भूषण प्रसाद ने कहा कि, पशुओं की चिकित्सा अपने आप में एक दुरूह काम है। क्योंकि पशु मूक होते हैं वो अपनी पीड़ा बता नहीं सकतेत्र उन्हें दवा के साथ ही बहुत सेवा की जरूरत भी होती है।

वरिष्ठ पत्रकार श्री एन के मुरलीधर ने कहा कि पर्यावरण विषय पर समाचार पत्र का प्रकाशन बहुत जरूरी भी है।आज चीन इतनी तरक्की के बाद भी 1985 से ही वन संरक्षण के कार्य में लगा हुआ है।जब सारी दुनिया वन बचाने के अभियान में जुटी थी उसी दौर में हमारे देश में सबसे ज्यादा वन काटे गये। जो युक्लिप्टस वृक्ष विदेशों में बैन है या दलदली जमीन को खत्म करने के लिये उपयोग होते हैं, उसे ही हमारे वन विभाग ने लगा कर भूजल स्तर को नीचे करने का काम किया। आज पर्यावरण संरक्षणके लिये सबों को जागरूक होने की जरूरत है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्रीन रिवोल्ट के संपादक मनोज शर्मा ने की। इस मौके पर कार्यकारी संपादक मनोरंजन सिंह पर्यावरण संरक्षण के लिये काम कर रहे अमृतेश पाठक, अरूण तिवारी व अन्य उपस्थित रहे।

हिमालय की गोद में भारत और चीन के बीच स्थित भूटान कई मायनों में है अनूठा

भूटान : जहां खुशहाली है विकास का पैमाना
ऑर्गेनिक देश में नहीं है कीटनाशक की दूकान

पहली बार प्रधानमंत्री बनने पर मोदी सबसे पहले भूटान के दौरे पर ही गये थे ये उसके महत्व को दर्शाता है। अभी हाल ही में मोदी दुबारा भूटान के दौरे पर गये थे। कभी भारत चीन के बीच डोकलाम विवाद से चर्चा में आया भूटान कई मायनों में अनूठा देश है। कभी राजशाही वाला यह देश इस माने में भी खास है कि यहां के राजा ने जिग्मे सिग्मे वांगचुग ने खुद ही पहल करके यहां से राजशाही खत्म करने की पहल की। भारत का अभिन्न मित्र हमारा यह छोटा पड़ोसी देश सामरिक महत्व के साथ ही बहुत ही खुबसूरत पर्यटन स्थलों वाला भी है। और गर्मियों में भारतीयों का फेवरीट भी। प्रधानमंत्री ने भी कहा कि, भूटान जैसा पड़ोसी देश कौन नहीं चाहेगा?

राजन कुमार

हिमालय बहुत कुछ अपने में समेटे हुये है। हिमालय की विविधताओं और रहस्यों पर तो कभी हिमालय दर्शन नाम से सीरियल भी दूरदर्शन में दिखाये जाते थे। इसी हिमालय की आगोश में भूटान है। इसके उत्तर में चीन है और दक्षिण में भारत। भारत से उसके सहज रिश्ते है और भूटान भी भारत को अपना बड़ा भाई और संरक्षक मानतो आया है। तभी तो चीन केहरकतों पर उसने भारत को सूचना दी और भारत को हस्तक्षेप करना पड़ा।

भूटान लंबे समय तक राजशाही में रहा, पर यह राजशाही निरकुंश नहीं रही। और कुछ सालों पहले खुद वहां के राजा ने राजशाही खत्म कर दी। शायद ऐसा बहुत कम हुआ हो। ज्यादातर विकास परियोजनाएँ जैसे सड़कों का विकास इत्यादि भारतीय सहयोग से ही होता है। भूटान में कीटनाशकों की कोई दूकान नहीं है।

कुछ लोगों के अनुसार भान संस्कृत के भू-उत्थान से बना शब्द हैं जिसका शाब्दिक अर्थ है ऊंची भूमि। कुछ के अनुसार यह भोट-अन्त (भोटान्त) (यानि तिब्बत का अन्त) का बिगड़ा रूप है। यहां के निवासी भूटान को ड्रुग-युल (अजगरों का देश) तथा इसके निवासियों को ड्रुगपा कहते हैं।

कभी उल्फा और केएलओ उग्रवादियों के भूटान में शरण लेने पर भूटान की सेना ने भारत के कहने पर अपने जंगलों से उग्रवादियों को खदेड़ दिया था। और कुछ उग्रवादी मारे भी गये थे।

भूटान दुनिया के उन कुछ देशों में है, जो खुद को शेष संसार से अलग-थलग रखता चला आ रहा है और आज भी काफी हद तक यहाँ विदेशियों का प्रवेश नियंत्रित है। देश की ज्यादातर आबादी छोटे गाँव में रहते हैं और कृषि पर निर्भर हैं। शहरीकरण धीरे-धीरे अपने पाँव जमा रहा है। बौद्ध विचार यहाँ की ज़िंदगी का अहम हिस्सा हैं। विश्व के सबसे छोटी अर्थव्यवस्थाओं में से एक भूटान का आर्थिक ढाँचा मुख्य रूप से कृषि और वन क्षेत्रों और अपने यहाँ निर्मित पनबिजली के भारत को विक्रय पर निर्भर है। ऐसा माना जाता है कि इन तीन चीजों से भूटान की सरकारी आय का 75% आता है। कृषि जो यहाँ के लोगों का आधार है, इस पर 90% से ज्यादा लोग निर्भर हैं। भूटान का मुख्य आर्थिक सहयोगी भारत हैं क्योंकि तिब्बत से लगने वाली भूटान की सीमा बंद है। भूटान की मुद्रा ङुल्ट्रम है, जिसका भारतीय रुपया से आसानी से विनिमय किया जा सकता है। औद्योगिक उत्पादन लगभग नगण्य है और जो कुछ भी है, वे कुटीर उद्योग की श्रेणी में आते हैं। ज्यादातर विकास परियोजनाएँ जैसे सड़कों का विकास इत्यादि भारतीय सहयोग से ही होता है। भूटान की पनबिजली और पर्यटन के क्षेत्र में असीमित संभावनाएँ हैं।भूटान चारों तरफ से स्थल से घिरा हुआ पर्वतीय क्षेत्र है। उत्तर में पर्वतों की चोटियाँ कहीं-कहीं 7000 मीटर से भी ऊँची हैं, सबसे ऊँची चोटी कुला कांगरी 7553 मीटर है। गांगखर पुएनसुम की ऊँचाई 6896 मीटर है, जिस पर अभी तक मानवों के कदम नहीं पहुँचे हैं। देश का दक्षिणी हिस्सा अपेक्षाकृत कम ऊँचा है और यहाँ कई उपजाऊ और सघन घाटियाँ हैं, जो ब्रह्मपुत्र की घाटी से मिलती है। देश का लगभग 70% हिस्सा वनों से आच्छादित है। देश की ज्यादातर आबादी देश के मध्यवर्ती हिस्सों में रहती है। देश का सबसे बड़ा शहर, राजधानी थिम्फू है, जिसकी आबादी 50,000 है, जो देश के पश्चिमी हिस्से में स्थित है। यहाँ की जलवायु मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय है।सरकार की नीतियों का निर्धारण इस बात को ध्यान में रखकर किया जाता है कि इससे पारंपरिक संस्कृति और मूल्यों का संरक्षण हो सके। हालांकि भूटान में रहने वाले नेपाली मूल के अल्पसंख्यक समुदायों में कुछ असंतोष है, जो अपनी संस्कृति पर भूटानी संस्कृति लादे जाने के खिलाफ हैं। संभवतः भूटान चर्चा में भी नहीं आता अगर वहां चीन की हरकतें नहीं होतीं और डोकलाम को लेकर भारत से तनातनी नहीं होती।

ओलंपिक या एशियाड के परेड में जब भूटान के खिलाड़ियों की बारी आती है तो सिर्फ तीरंदाजी की टीम के कुछ खिलाड़ी ही दिखते हैं। तीरंदाजी भूटान का राष्ट्रीय खेल भी है।

बालाजी डेंटल केयर

समस्त दंत रोगों की चिकित्सा उपलब्ध।

Address: Shiv Bhawan, Laah Kothi, Ratu Road, Ranchi-5
Ph. 9006833759

प्रधानमंत्री की चिंता

स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री के भाषण में पर्यावरण की चिंता दिखी। जल संरक्षण से लेकर हर प्रकृति प्रदत्त साधनों के प्रति हमरी लापरवाही और उनके अत्यधिक दोहन पर उन्होंने अपनी बातें कहीं। उन्होंने यहां तक कहा कि परिवार में एक बच्चे को लाने से पहले ये सोचना भी आवश्यक है कि उस बच्चे को क्या हम बुनियादी चीजें भी दे पायेंगे ?उनका आशय शुद्ध जल, हवा, भोजन अनुकूल आवास से था।

रांची में नगर निगम ने वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनवाना अनिवार्य कर दिया है, नहीं बनवाने वालों से अतिरिक्त टैक्स वसूला जायेगा। वहीं खुद संबंधित विभागों की लापरवाही भी देखने को मिलती है। जब वाटर सप्लाई के पाईप फट जाते हैं और घंटो उससे लाखो लीटर पानी बह कर बर्बाद हो जाता है। सड़क निर्माण में वाटर सप्लाई के पाइप क्षतिग्रस्त हो जाते हैं और उन्हें उसी हालत में छोड़ दिया जाता है। लंबे समय तक वह क्षेत्र पानी के सप्लाई के घंटों में नहर बना रहता है। और शुद्ध जल की बर्बादी होती रहती है।

> प्रधानमंत्री ने लालकिले से अपने भाषण में दबे जुबान ही यह बात देशवासियों से कह दी कि, सरकारें कितना भी स्वास्थ्य, सड़क, बिजली, पानी का इंतजाम कर लें। लेकिन तेजी से बढती जनसंख्या इन सारे इंतजामों को अपर्याप्त बना देती है। हमें प्रकृति के संरक्षण के साथ हीं बढती जनसंख्या पर भी अंकुश रखना ही होगा।

भविष्य में हालात और खराब हो सकते हैं। बढ़ती जनसंख्या से मनुष्य के जीवन के लिये बुनियादी जरूरतों पर भी संकट आ सकता है। महाराष्ट्र के कुछ हिस्से जहां गर्मियों में बूंद बूंद को तरस जाते हैं वहीं उन राज्यों और महानगरों में भी बाढ़ देखने को मिल रहा है जहां पहले यह समस्या नहीं थी। आंध,राजस्थान, पंजाब में बाढ़ आ रहा है और उसमें जान माल का नुकसान हो रहा है। हमने वनों को नष्ट करने के साथ ही शहर के उन सभी नदी नालों को भी खत्म कर दिया जो जल संचय करने के साथ ही अतिवृष्टी में हमारी रक्षा भी करते थे। वन भू संरक्षण का करते हैं, जिन्हें हम उजाड़ते जा रहे हैं। तेलगांना में बाढ़ मुंबई जैसे महानगर का बारिश में जलमग्न होना चेन्नई, बेंगलुरू में बाढ़ ?भाखड़ा नांगल बांध से पानी छोड़ने से पंजाब के शहर में बाढ़ ये बता रहे हैं कि, इनके पीछे हमारी लापरवाही है। यह एक दुखद आश्चर्य की बात है कि, जहां साल के बाकी सालों में लोग जल के लिये त्राहीमाम कर रहे होते हैं वहीं मॉनसून के तीन महिनों में महानगर तक बाढ की चपेट में आ जाते हैं। दरअसल इन सबके पीछे आपदा से ज्यादा जिम्मेवार तो हम सब हैं। बढ़ती जनसंख्या और प्रकृति का हद से ज्यादा दोहन हमें और भी संकट में ही डालेगा।

कचड़े को रिसाइकल करना है बड़ा विषय?

सुनीता नारायण

मेरी नजर कचरे के एक विशाल ढेर पर है जो बाकी कचरे से अलग है। यह कचरा मेरे, आपके और हम जैसे अनगिनत लोगों के घरों से आया है। इसे छांटा गया है, अलग किया गया है और इससे एक अलग तरह का ढेर लग गया है। मैं दिल्ली के टिकरी कलां में हूं जिसे एशिया का सबसे बड़ा थोक कचरा बाजार कहा जा सकता है। जाहिर तौर पर यह जगह शहर के बाहरी इलाके में है क्योंकि हम सभी अपना कचरा नजरों से दूर रखते हैं। तभी तो वह हमारे जेहन से भी दूर रहता है। इस-ाके बाद हम उस बाजार में जाते हैं जो बहादुरगढ़ में स्थित है। यह दिल्ली से लगा हुआ हरियाणा का इलाका है। यहां भी छंटे और बिना छंटे कचरे के ढेर लगे हैं। दिल्ली का बाजार कुछ हद तक औपचारिक है क्योंकि इसके लिए दिल्ली विकास प्राधिकरण ने जमीन मुहैया कराई है। हरियाणा का बाजार कृषि भूमि पर स्थित है। कचरे की ढेर गिरने से मरने वाले गरीब ही है और आगे मरने वाले भी गरीब ही होंगे।

मैं किसानों से पूछती हूं कि उन्होंने अपनी जमीन कचरे के कारोबार के लिए क्यों दी? वे हमारा ध्यान उस विकास की ओर दिलाते हैं जिसका नाम मॉडर्न इंडस्ट्रियल एस्टेट है और जो उनके खेतों के करीब स्थित है। रिवर्स बोरिंग (जमीन में गहरे गड्ढे कर अपना कचरा दफन करना) के कारण इस औद्योगिक क्षेत्र से भारी मात्रा में औद्योगिक कचरा किसानों की खेती की जमीन में मिलता है। यहां का भूजल रसायनों से संक्रमित हो गया है। अब यहां खेती संभव नहीं है। हम यहां ढेरों चिमनियां और उनसे निकलता धुआं देख सकते हैं। हमारे साथ मौजूद प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारी कहते हैं कि हमें सबूत दीजिए और हम उन औद्योगिक इकाइयों को बंद कर देंगे जो रिवर्स बोरिंग करती हैं। दरअसल वे असल सवालों के जवाब देना ही नहीं चाहते।

खेतों के करीब और फैक्टरियों से वापस आते समय हम महसूस कर सकते हैं कि किस कदर बदबू और गंदगी फैली हुई है। हरियाणा सरकार ने व्यवस्था की है कि उसके प्रदूषण बोर्ड के अधिकारी पांच साल में एक बार ही किसी औद्योगिक इकाई का निरीक्षण कर सकते हैं।जाहिर है वह चक्र पूरा हो चुका है। इसे हमारे समय की विकृत चक्रीय अर्थव्यवस्था भी कहा जा सकता है। हम कचरा उत्पन्न करते हैं, जमीन और अपनी आजीविका को नष्ट करते हैं, उसके बाद गरीबों को कोई विकल्प देने के बजाय हम उसी कचरे का कारोबार शुरू करते हैं जिसे हमने उत्पादित किया और फेंका है। मैं वहां पर्यावरण प्रदूषण (निरोध एवं नियंत्रण) प्राधिकरण (ईपीसीए) के चेयरमैन के साथ गई थी क्योंकि मैं समझना चाहती थी कि कचरे को खुले में जलाए जाने से रोकने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं। इससे पहले जब चेयरमैन भूरे लाल ने इस क्षेत्र का दौरा किया था तो उन्हें टिकरी और मुंडका प्लास्टिक फैक्टरी में बहुत बड़े पैमाने पर (यह कम करके बताया गया) कचरा मिला था। उन्होंने इस कचरे को हटाने और नियंत्रित रूप से जलाने के लिए एक ऊर्जा संयंत्र ले जाने का निर्देश दिया था। इससे पिछले जाड़ों में बहुत अधिक फर्क पड़ा था। बताया गया कि इस बार खुले में बहुत कम कचरा था। कारोबारियों ने हमें बताया कि कचरा भी एक संसाधन है। वे उसे यूंही जलाए जाने नहीं दे सकते। परंतु सच यह भी है कि कचरे का एक प्रकार ऐसा भी है जिसका पुनर्चक्रण संभव नहीं है। हम जैसे तमाम लोग जो जूते खरीदते हैं, उनके लिए एक जानकारी यह है कि जूतों का ऊपरी हिस्सा दोबारा प्रयोग में नहीं लाया जा सकता। उसे जलाना पड़ता है। ऐसी तमाम अन्य चीजें भी हैं। उदाहरण के लिए बहुस्तरीय प्लास्टिक, हर बार जब हम प्रसंस्कृत और डिब्बा बंद चीजें खाते हैं तो हम ढेर सारा प्लास्टिक कचरा उत्पन्न करते हैं। इसमें भी दो राय नहीं है कि टिकरी और बहादुरगढ़ जैसे ये बाजार जहां सबसे गरीब लोगों को रोजगार मिलता है, उनके चलते ही आज हम सब शहरों में रहने वाले कचरों के ढेर में डूबने से बचे हुए हैं। ये बाजार गरीबों के श्रम पर आधारित होते हैं। गरीब हमारे कचरे को छांटते हैं, उसमें से किसी भी कीमत वाली चीज को अलग करते हैं और उसे प्राथमिक संग्राहक को बेच देते हैं। वह उसे आगे बेचता है और यह सिलसिला चलता रहता है। यह अनौपचारिक कारोबार है लेकिन बहुत संगठित तरीके से काम करता है। मुझे बताया गया कि इस बाजार में कचरे से 2,000 उत्पाद छांटे जाते हैं और इनकी कीमत 5 से 50 रुपये प्रति किलोग्राम तक होती है। इसके कारोबारी जीएसटी चुकाते हैं। पहले सरकार ने 18 फीसदी जीएसटी लगाया था जिसे अब घटाकर 5 फीसदी कर दिया गया है। सरकार इस कारोबार से भी आय अर्जित करती है। इसका समर्थन किया जाना चाहिए क्योंकि यह कचरे से संसाधन बनाता है और हमारे आसपास कचरे के ढेर लगने से बंचाता है। हमें इस कारोबार के बारे में कुछ नहीं पता। परंतु हम मानते हैं कि इसे गंदा माना जाता है।

नगर निगम कचरा डालने के लिए जमीन दे देंगे लेकिन उसके पुनर्चक्रण के लिए कुछ नहीं करेंगे। हमारे शहरी नियोजन में कबाड़ की दुकानों के लिए कहीं जगह नहीं है। यह ऐसा मुद्दा है जो मुझे खाए जाता है।

> कचरे के प्रबंधन का सही मॉडल क्या होना चाहिए? क्या हमें यह बात स्वीकार कर लेनी चाहिए कि यह कारोबार गरीबों को आजीविका मुहैया कराता है इसलिए यह बेहतर है? इसका अर्थ यह होगा कि हम अधिक से अधिक वस्तुओं का इस्तेमाल करें और उन्हें रद्द करते चलें। क्या यही भविष्य की राह है? मैं यह सवाल केवल दिल्ली के टिकरी के संदर्भ में नहीं कर रही बल्कि यह हमारे आसपास की पूरी दुनिया से जुड़ा सवाल है। चीन द्वारा अपने दरवाजे विदेशी कचरे के लिए बंद किए जाने के बाद पुनर्चक्रण करने वालों ने अपना कचरा बेचने के लिए विभिन्न देशों की तलाश शुरू कर दी। तो अब क्या यह हमारी कचरा समस्या का हल है? यकीनन नहीं।

लेखिका सुनीता नारायण देश की जानी मानी पर्यावरणविद् है

फोरलेन के कारण भूस्खलन का संकट

भरत डोगरा

हिमालय व पश्चिम घाट क्षेत्र में अनेक जानलेवा भू-स्खलनों के समाचार मिले हैं। अनेक क्षेत्रों में भूस्खलन पहले से कहीं अधिक बढ़ गए हैं। हिमाचल प्रदेश में परवानू से शिमला जाने वाला हाईवे एक समय अपनी रमणीय और सुखद यात्रा के लिए प्रसिद्ध था। कुछ समय पहने यहां हाईवे फोरलेन करने के लिए हजा-रों पेड़ काटे गए। बहुत भारी-भरकम मशीनों से पहाड़ों को तोड़ा व काटा गया। इसका परिणाम यह हुआ कि यहां जगह-जगह भू-स्खलन होने लगा। बड़ी मात्रा में मलबा व भारी पत्थर पहाड़ों से गिरकर यात्रियों व गांववासियों के लिए बड़ा खतरा बनने लगे। अनेक गांव व मार्ग, खेत व दुकानें संकटग्रस्त हो गए हैं।यदि भू-वैज्ञानिकों व स्थानीय समुदायों की विस्तृत व निष्पक्ष राय पहले से प्राप्त की हो तो इन गंभीर गलतियों से बचा जा सकता था। हालांकि दुष्परिणामों को देखते हुए अब शीर्ष अधिकारियों ने खुद कहा है कि भविष्य ने फोरलेन के नये प्रोजेक्ट राज्य स-रकार नहीं लेना चाहेगी, पर जो तबाही हो चुकी है, उसे संभालना कठिन हो रहा है। इस तरह के अनेकों उदाहरण हैं।

जहां कच्चे पहाड़ों से अत्यधिक व अनावश्यक छेड़छाड़ के कारण व पेड़ों के अत्यधिक कटान से अनेक पर्वतीय क्षेत्रों में भूस्खलन बहुत बढ़ गए हैं। इनमें से अनेक भूस्खलन जानलेवा सिद्ध हुए हैं। अब तो विश्व स्तर के अनुसंधान भी बता रहे हैं कि भू-स्खलन बहुत आकि मौतों के लिए जिम्मेदार है। जानी-मानी विज्ञान पत्रिका ''ज्योलॉजी' ने हाल ही में उपलब्ध जानकारी व आंकड़ों के आधार पर दावा किया है कि विश्व में भूस्खलन के कारण होने वाली मौतों की संख्या वास्तव में पहले के अनुमानों की उपेक्षा दस गुणा ज्यादा है। यह ''डरहम फेटल लैंडस्लाइड डेटाबेस' के आधार पर कहा गया है। जानलेवा भूस्खलनों संबंधी आंकड़ों व जानकारियों के इस कोष को ब्रिटेन के डरहम विविद्यालय के अनुसंधानकर्त्ताओं ने तैयार किया है। जहां पहले के अनुमान बताते थे कि वर्ष 2004 और 2010 के बीच भूस्खलनों के कारण 3,000 से 7,000 मौतें हुई, वहां इस नये डेटाबेस ने बताया है कि इस दौरान भूस्खलनों में 32,300 मौतें हुई।

अधिक भूस्खलन वाले क्षेत्रों में भारत के अनेक पर्वतीय क्षेत्र भी बताए गए हैं। इन अनुसंधानकर्ताओं ने कहा है कि इस नये डेटाबेस से उपचार व रोकथाम के उपाय करने में सरकारों को मदद मिलेगी व इस तरह अनेक बहुमूल्य जीवन बचाए जा सकेंगे। इस अनुसंधान का भारतीय संदर्भ में महत्त्व स्पष्ट है क्योंकि हाल के वर्षों में भूस्खलनों से होने वाली भीषण क्षति के समाचार वैसे भी बढ़ते ही जा रहे हैं। भूस्खलन संबंधी राष्ट्रीय स्तर पर आंकड़े सहजता से हमारे देश में उपलब नहीं होते हैं, पर बहुत सी छिटपुट जानकारी विभिन्न पर्वतीय राज्यों में बिखरी हुई हैं। जरूरत इस बात की है कि राष्ट्रीय स्तर पर इस आपदा के महत्त्व को समझ-ाकर इस संबंधी उपचार, रोकथाम व सहायता के उपायों पर समुचित ध्यान दिया जाए। विशेषकर इस ओर विशेष ध्यान देना जरूरी है कि पर्वतीय क्षेत्र में किन मानवीय कारणों व गलतियों से भू-स्खलन के कारण होने वाली क्षति बढ़ी है। एक बड़ी वजह तो यह है कि विभिन्न निर्माण कायरे (विशेषकर बांध निर्माण) और खनन के लिए, पर्वतीय क्षेत्रों में विस्फोटकों का अंधाधुंध उपयोग किया गया है। इस कारण भूस्खलन की संभावना बढ़ गई है। इसको नियंत्रित व नियमित करना जरूरी है।

वन विनाश भी भू स्खलन की आशंका बढ़ने का एक अन्य बड़ा कारण रहा है। भूस्खलन अपने आप में तो बड़ी आपदा है ही साथ में वे बाढ़ को और उग्र करते हैं व बहुत विनाशकारी व अचानक आने वाली बाढ़ का कारण भी बनते हैं। यदि हिमालय में किसी नदी का बहाव भूस्खलन के मलबे के कारण रुक जाता है तो इससे कृत्रिम अस्थाई झील बनने लगती है। अंत में पानी का वेग अधिक होने से जब यह झील फूटती है तो बहुत पलयकारी बाढ़ आ सकती है, जैसा कि कनोडिया गाड में झील बनने के कारण उत्तरकाशी में बाढ़ आई थी और हाल ही में नेपाल में ऐसी झील टूटने पर बिहार में बाढ़ आई है। इन सभी समस्याओं को ध्यान में जहां खतरनाक भूस्खलन होते हैं वहां उपचार करने के लिए समुचित ध्यान देना चाहिए। भूस्खलन से पीड़ित परिवारों को समुचित सहायता समय पर पहुंचानी चाहिए। जहां भूस्खलन के कारण किसी गांव या बस्ती की स्थिति बहुत खतरनाक हो गई है, वहां बड़े हादसे से पहले ही पास के किसी क्षेत्र में वैकल्पिक आवास की व्यवस्था करनी चाहिए। यदि पर्वतीय क्षेत्रों विशेषकर हिमालय में पर्यावरण व वन रक्षा पर समुचित ध्यान दिया जाएगा तो भू-स्खलन का संकट कम करने में भी सहायता मिलेगी।

हिमालय का क्षेत्र आपदा से हमेंशा दो चार होता रहता है। अतीत में भी वहां कई बड़े हादसे हुये हैं। केदारनाथ हादसा हो या उत्तरकाशी का भूकंप सभी हादसों में कई जानें गयीं। यह हम सब जानते हैं कि इस क्षेत्र की मिट्टी नर्म है जिसे घने वृक्ष ही जकड़ कर रखते हैं। इसके बावजूद वृक्षों की लगातार कटाई और लापरवाही जारी रही। इस कारण से हर वर्ष बरसात में भूस्खलन की घटनायें बढ रही हैं।

यूक्लप्टिस का पेड़ है नुकसानदेह

लंबे समय तक वन विभाग ने देश में जहां तहां यूक्लप्टिस के पेड़ लगाये।और कई लोग इसे औषधीय पेड़ बताते रहे। हकीकत में यह पेड़ अपने आस पास के जल को खींच लेता है और भूजल स्तर नीचे चला जाता है। आस्ट्रेलिया में इसके पेड़ों को दलदली ईलाके को ठिक करने के लिये लगाया जाता है। इसके पौधे किसी भी उसर जमीन पर भी लग जाते हैं और पत्तियों में गंध होने के कारण इसे जानवर नुकसान भी नहीं पहुंचाते। पानी की कमी वाले ईलाकों में इस पेड़ को बिल्कुल नहीं लगाना चाहिये। झारखंड में भी यूकलिप्टस के पेड़ बहुतायत में लगाये गये हैं। झारखंड में वैसे भी भूजल स्तर नीचे है ऐसे में इसके बड़े पेड़ और नुकसान पहुंचा रहे हैं।

रांची में सीएनजी ऑटो चलेंगे

रांची : प्रदूषण रोकने के लिये रांची में अगले कुछ महिनों में सीएनजी ऑटो का चालन शुरू होगा। हालांकि लंबे समय से रांची में ई रिक्शा चल रहे हैं औश्र भले इनसे प्रदूषण नियंत्रण हो रहा है, लेकिन महात्मा गांधी रोड में इनके कारण ही जाम की स्थिति बनी रहती है। सीएनजी ऑटो में ईंधन खर्च कम होंगे और इससे निकलने वाले धुंए की मात्रा भी बहुत कम रहती है।

दो दशक पहले दिल्ली में सुप्रीम कोर्ट ने सीएनजी ऑटो चलाने का निर्देश दिया था।

पुत्र वियोग में भैयाराम यादव ने लगा डाले 40 हजार पेड़

पहले पत्नी उसके बाद बीमारी से पुत्र की मृत्यु से टूट चुके भैयाराम ने श्लोगन "एक वृक्ष सौ पुत्र समान" पढ कर 50 एकड़ जमीन को कर दिया जंगल से आबाद

जिस प्रकार हजारीबाग के दूधमटिया के महादेव महतो के वृक्ष रक्षाबंधन अभियान ने हजारीबाग, सिमडेगा, रांची के ओरमांझी में हजारो एकड़ भूमि पर वन संरक्षण का काम किया है, वैसा ही दुरूह काम चित्रकूट के भैया राम यादव ने किया है। अकेले ही इन्होंने 50 एकड़ भूमि पर वन लगा कर उसे आबाद कर डाला

यह कहानी है चित्रकूट के 'वृक्ष पुरुष' कहे जाने वाले बाबा भैयाराम यादव की। उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले के भरतपुर गाँव के रहने वाले भैयाराम ने साल 2007 में शपथ ली थी कि वे सिर्फ़ पेड़ों के लिए जियेंगे। आज, लगभग 11 साल बाद वे अपने लगाए हुए 40 हज़ार पेड़ों की अपने बच्चों की तरह देखभाल कर रहे हैं। उनके इस फ़ैसले के पीछे की वजह उनके जीवन में घटी एक दुर्घटना है।

वह बताते हैं, ''पहले मेरी ज़िंदगी का कोई उद्देश्य नहीं था। मेरी शादी हो गई और एक बेटा भी हुआ। लेकिन 2001 में मेरी पत्नी बेटे को जन्म देते वक्त चल बसी, उसके सात साल बाद 2007 में मेरा बेटा भी बीमारी के चलते गुजर गया और मैं अकेला रह गया। तब मैंने तय किया कि अब मैं दूसरों के लिए जियूँगा न कि खुद के लिए।''पत्नी और पुत्र वियोग में भैयाराम चित्रकूट में भटकने लगे, इसी दौरान उन्होंने वन विभाग का स्लोगन 'एक वृक्ष 100 पुत्र समान' पढ़ा। भैयाराम उसी वक्त अपने गाँव भरतपुर लौट पड़े। उन्होंने गाँव के बाहर जंगल में जाकर झोपड़ी बनाई और वहीं बस गए। वहां वन विभाग की खाली पड़ी ज़मीन पर पौधे लगाए और अपने गाँव से 3 किलोमीटर दूर से जंगल में पानी ले जाकर पौधों को पानी पिलाने लगे। लोगों को लगा कि भैयाराम पागल हो चुके हैं।भैयाराम जी का कहना है कि''मेरे पिता की इच्छा थी कि मैं मरने से पहले अपने जीवन में 5 महुआ के पेड़ लगाऊं। वे मुझे स्कूल तो नहीं भेज सकते थे लेकिन उन्होंने मुझे पेड़ लगाना और फिर उनकी देखभाल करना ज़रूर सिखाया। मैं ये पेड़ अपनी ज़मीन में नहीं लगा सकता था क्योंकि मुझे डर था कि भविष्य में अगर किसी ने इन पेड़ों को काट दिया तो?''

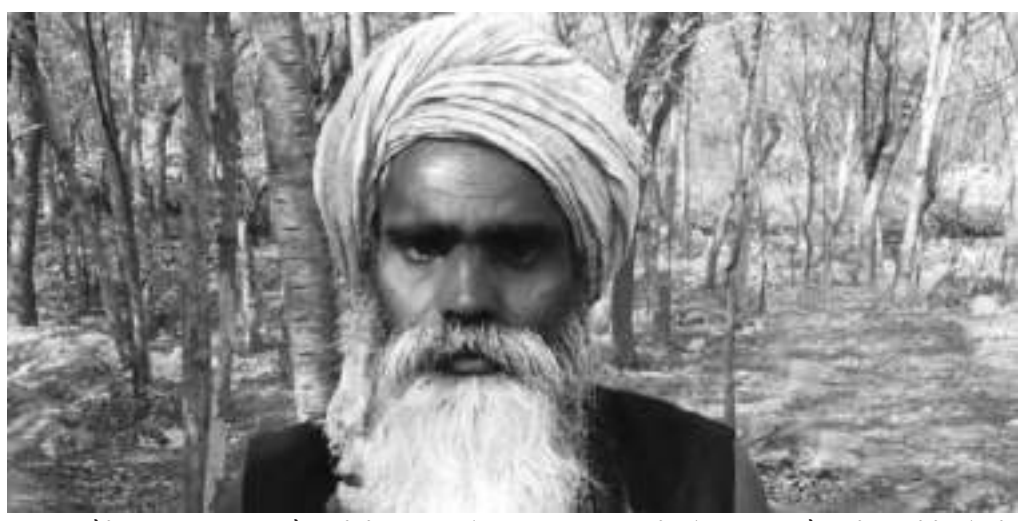

भैयाराम जी ने आगे बताया। समय के साथ भैयाराम यादव के 5 पौधे, 40 हज़ार पेड़ों में तब्दील हो गए। लेकिन उन्हें अपने इस अभियान में काफ़ी समस्याओं का सामना करना पड़ा। गाँव के बाहर पानी का कोई स्त्रोत नहीं था। इसलिए वे हर रोज़ अपने कंधे पर एक पतली-सी रस्सी के सहारे 20-20 किलोग्राम के दो डिब्बों में गाँव से पानी भरकर लाते और पौधों को पिलाते, ऐसा वे दिन में चार बार करते थे।भैयाराम यादव की कड़ी मेहनत और विश्वास ने बुंदेलखंड की 50 एकड़ भूमि पर आज एक घना जंगल उपजा दिया है, वरना बुंदेलखंड को सूखाग्रस्त क्षेत्र कहा जाता है क्योंकि यहाँ बारिश बहुत ही कम होती है। इस जंगल को इतना घना और बड़ा बनाने के लिए उनकी 11 साल की मेहनत लगी।

पिछले दो सप्ताह में ही कई लोगों पर हाथियों ने किया है जानलेवा हमला

हाथियों का तथाकथित उपद्रव और हम मनुष्यों का दायित्व

डॉ मंगला प्रसाद मिश्र

हाल के कुछ दिनों में झारखंड में कई जगहों पर हाथियों ने उत्पात मचाया और कई लोगों को मार डाला। हाथियों का हमला कोई नयी बात नही है। वर्षो से हम व्यक्तिगत भ्रम पाल बैठे है, अथवा हमें अपनी किसी गलती के प्रति फल को बेघर-बेसहारा प्राणियों पर थोप्ने की आदत हो चुकी है, शायद ही काई माह ऐसा बीतती है जब हमें ऐसेी खबरें सुनने या पढ़ने को न मिले, अमुक क्षेत्र में हाथियों के झुंड ने फसलों को बरबाद कर दिया, घर तबाह कर डाले, कुचल कर मार डाला आदि-आदि प्राकृतिक व्यवस्था ऐसी है कि कभी किसी हाथी को या हाथियों के प्रतिनिधि को न्यायालय के कठघरे में अपने पक्ष में कुछ बोलने के लिए खड़ा होने का अवसर नहीं मिल पाता यदि ऐसा संभव होता कि हाथी अपने पक्ष में कुछ बोल पाते और उनके साथ न्याय किया जाता तो फैसला शायद हम अहंकारी और शासक प्रवृतिवाले मनुष्यों के खिलाफ होता, और तब शायद हममें एक तरफा दोष मढ़ने की आदत न होती।

वर्षो से हम हाथियों के घरों यानी जंगलों को उजाड़ते आ रहे हैं और अब तो जंगल भी घटते जा रहे हैै अब जिसका घर उजड़ जाये वह सड़क पर या खेत में ही तो जायेगा अपने को जीवित रखने के लिए भोजन का जुगाड़ भी तो करेगा, सब कुद प्राकृतिक स्वभाव और प्राकृतिक पंरपरा के अनुसार ही होगा, हम प्राकृतिक नियमों को तोड़ते हैं, जानवर नहीं, हमने अपना प्राकृतिक आवास छोड़ा हे क्योंकि हम कृत्रिम आवास बना कर उनमें रह सकते है, और उन मासूम जानवरों के प्राकृतिक आवास को उजाड़ सकते है, जिन्हें अपना आवास बनाना नही आता और यही हम करते आ रहे है, इतना ही नही अवसर मिलते ही उनके दांत काट लेते है, उन्हें बिजली का शॉक देकर मार डालते है। और यह सब अपराध कर खुश होते है, यदि कभी किसी बेघर बेसहारा हाथी से ऐसा कुछ हो जाय जो हमें पसंद नही तो हाय-तौबा मचाते है, अखबारों में लेख लिखते है आपस में भी बातचीत करते है तो सरकारी अफसरों पर दोष मढ़ते है और व्यवस्था के लिए गुहार लगाते है, जंगलों की कटाई और लक-ड़ियों की तस्करी के समय होठ सिल लेते हैं, इशारों में बातें करते हैं और कानून से बचने के लिए तो एक सौ एक बहाने हैं, विद्वान लेखक और कुछ पर्यावरण बिंदू उपर्युक्त स्थिति को मानव-जानवर-संघर्ष (मैन-एनिमल कॉफ्लिक्ट) बताते हैं यद्यपि जानवर संघर्ष के आदी नहीं होते, संघर्ष तो मनुष्य करते है, गांधी जी ने कहा है जानवर कभी भी संगठित युद्ध नहीं करते, यह प्र-कृति प्रदत्त स्वभाव हर जीव-जंतु में पाया जाता है कि वह अपने ऊपर होने वाले अत्याचार का विरोध करता है रही बात मनुष्य की, तो उसके अत्याचारों की कोई सीमा नही, आज भारत में हाथियों की कुल संख्या लगभग 20,000 ही रह गयी है जिनमें लगभग 1000 ही आइवरी या दांतोवाले हाथी हैं, केवल नर हाथी में ही लंबे दांत या आइवरी होते हैं, इनका व्यापार अवैध रूप से वर्षो से फल-फूल रहा है, हाथी दांत की तस्करी इतनी बढ़ चुकी है कि नर हाथी लगभग समाप्त हो चुके है, आज एक हजार मादा हाथियों पर एक नर हाथी की उपस्थिति है नर-मादा हाथियों के अनुपात में यह असंतुलन मनुष्य की बर्बरता और धन लोलुपता की तरफ स्पष्ट संकेत करता है,

कुछ वर्षो से हाथी-दांत के व्यापारी अपने व्यापारिक हितों की रक्षा के लिए आवाजें उठा रहे हैं, सारी दुनिया में ऐसे व्यापारियों ने अपनी लाभबंदी करली हैं, उन्होंने भारतीय वन्य जीवन (संराण) अधिनियम एवं अंतराष्ट्रीय कानूनों को ताक पर रख कर अपने स्वार्थो की रक्षा के लिए लड़ने का मन बना लिया है हाल में भारत और केन्या ने एक संयुक्त प्रस्ताव लाकर ऐसे अंतराष्ट्रीय व्यापारियों को नियंत्रित करने की रणनीति तैयार की है, हाथी-दांत के व्यापा पर रोक लगाये बिना खतरे में पड़े हाथियों की प्रजाति को बचा पाना मुश्किल है, अब समय आ गया है कि मानव अधिकारों को भी परिभाषित और सुनिश्चित किया जाये हाथियों के प्राकृतिक आवासों को मनुष्य ने उजाड़ा हैं, मनुष्य ही उनके दांतों का व्यापार करता हैं, परिणाम भी मनुष्य को ही भोगने हैं सजा देने वाले हाथी नहीं हो सकते वे तो अपना बचाव करते हैं, हाँ प्रकृति स्वयं ही।

श्रीकृष्ण का सारा जीवन, सुख दुख जुड़ा रहा है प्रकृति से

मनोज कुमार शर्मा

सारा देश कृष्णजन्माष्टमी 23को मना रहा है। हाल के कुछ वर्षों से मुंबई के दही हांडी की परंपरा अब देशव्यापी हो गयी है। अब शहर शहर में दही मटकी बांधने और उसे फोड़ने को गोविंदाओं की टोली लगी रहती है। हमारा देश उत्सवजीवी है। उत्सव और परंपरायें अपनी जगह। लेकिन इन सब से इतर अगर कृष्ण की जीवनी को हम देखें तो उनके पूरे जीवन काल में वनों, बगीचों, वन्य जीवो नदियों का जुड़ाव दिखता है। हम सभी जानते हैं कि कृष्ण का जन्म रात्रि में कारागार में हुआ और कंस के भय से उसी रात उनके पिता बासुदेव उन्हें टोकरी में भर कर यमुना पार नंद के घर पहुंचा आये। कहते हैं नदी पार करते समय यमुना में एकाएक उफान आ गया और जब यमुना ने कृष्ण के पांव छू लिये तब शांत हो गयी और पिता बसुदेव उन्हें लेकर वृंदावन नंद के घर पहुंचा आये। इस पूरे प्रसंग में यमुना मात्र नदी नहीं है वह एक समर्पित भक्त की तरह है जो कृष्ण के पांव छू लेना चाहती थी।

कृष्ण के प्रत्येक लीला में हम उनका गायों के प्रति प्रेम देख सकते हैं। कृष्ण पशु पक्षियों के प्रति अति दयालु थे। इसका एक प्रसंग हम सुनते हैं कि, जब यमुना नदी में कालिया नाग ने डेरा जमा लिया और यमुना का जल उस विषधर के विष से जहरीला हो गया। उसके जल को पीकर जीव जंतु काल कवलित होने लगे, कृष्ण की गायें भी बीमार होने लगीं तो कृष्ण यमुना में कूद पड़े और उस दुष्ट कालिया नाग को परास्त कर नाथ कर ले आये। उसके बाद कालिया नाग की पत्नी ने कृष्ण से विनती की अपने पति के जान की गुहार लगायी तब कृष्ण ने उसे छोड़ दिया। कृष्ण की जीवनी में हम पाते हैं कि प्रकृति की प्रत्येक चीज का प्रसंग जरूर आता है। चाहे वह गोवर्द्धन पर्वत उठाने की बात हो, बकासुर से युद्ध हो या यमुना नदी के किनारे लगे कदंब के उन वृक्षों की चर्चा हो जो गोपियों के साथ लीला के गवाह थे। यह कौन भूल सकता है कि कृष्ण की सर्वप्रिय वस्तु बांसुरी थी जो बांस की बनी थी। और आजीवन उनके साथ रही।

कृष्ण के जीवन बाग बगीचों का एक अलग स्थान है । कृष्ण को वृंदावन के बगीचे अति प्रिय थे। और उन्होंने तो अपनी पत्नी के लिये स्वर्ग से पारिजात के वृक्ष को ही हर लिया था। प्रसंग के अनुसार पारिजात के फूल कभी मुरझाते नहीं थे और स्वर्ग में वह इंद्र के लिये अमोल था। लेकिन कृष्ण की पत्नी की इच्छा होने पर उन्होंने इंद्र के साथ युद्ध किया और उसे पृथ्वी पर ले आये। और कृष्ण के महाप्रयाण की वह लीला जिसमें एक बहेलिये के हाथों वन में भूल से मृत्यु को प्राप्त होते हैं। हकीकत में हमारे पौराणिक कथायें, ग्रंथ, जनश्रुति सभी वनों, प्रकृति, जीव जंतुओं की महत्ता को ही बताते आये हैं।

वकालत छोड़ सुधीर ने किसानों के लिये बना डाला बीज गोदाम

पिछले साल झारखंड में ऐसी खबरें सुनने में आयीं कि किसानों ने खून पसीने की कमाई से धान के महंगे बीज खरी कर बुआई की और समय आने पर उन धानों की बालियों में दाने नहीं हुये। किसान नीरीह होकर ताकते रह गये। कोई जिम्मेवारी लेने को आगे नहीं आया। ऐसे में मथुरा के रहने वाले सुधीर अग्रवाल ने किसानों की मदद के लिये खुद पहल की और वैज्ञानिक तौर तरीकों पर अमल करके बीज गोदाम बना डाला।

आज देश की कृषि व्यवस्था अजीब दौर से गुज़र रही है। किसानों पर कर्ज के पहाड़ है। पानी, बिजली की समस्या से अन्नदाता परेशान है और आत्महत्या जैसे कदम उठा रहे हैं। लेकिन इस अंधेरे में भी उजाले की एक किरण है जो इतना सब कुछ हो जाने पर भी खेती से किसानों को जोड़े हुए है, आज भी हमारे किसान साथियों का खेती से पूरी तरह मोह भंग नहीं हुआ है। इसके पीछे उन प्रगतिशील किसानों की मेहनत छिपी है जो खुद कामयाब होने के बाद अपनी कामयाबी के मंत्र दूसरे किसान भाइयों को बांट रहे हैं।

ऐसे ही एक किसान है सुधीर अग्रवाल, मथुरा जिले के भूरेका गाँव के रहने वाले हैं। उन्हें देशभर में अग्रणी बीज उत्पादक किसान के रूप में जाना जाता है। उत्तर प्रदेश में पहला ग्रामीण बीज गोदाम बनाने और फसल बीमा के क्षेत्र में मथुरा को मॉडल जिले का गौरव दिलाने में सुधीर की खासी भूमिका रही है।उनके द्वारा तैयार किए गए बीज आसपास के राज्यों में भी अनेक किसानों को फायदा पहुंचा रहे हैं।

कृषि विज्ञान मेले में किसानों को संबोधित करते सुधीर। बीज उत्पादन शुरू करने के पीछे की कहानी याद करते हुए सुधीर कहते हैं, ''यह 1990 की बात है, जब हम बीज लेने जाते थे तो लाइन लगती थी। काफी देर खड़े रहने के बाद भी 200 ग्राम ही बीज मिलता था। कई बार हमें पंतनगर, दिल्ली तक जाना पड़ता था, वहां भी मेले में बीज खरीदना पड़ता था। आम किसानों के लिए तो यह भी मुश्किल था। हमारे इलाके में खेती के लिए उन्नत बीज नहीं थे। ऐस में मैंने सोचा की क्यों न मैं बीज तैयार करूँ। इससे कुछ वैल्यू एडिशन भी हो जाएगा और नई प्रजाति का बीज भी मिल जाएगा। इसलिए मैंने बीज उत्पादन के लिए प्रयास शुरू कर दिए।''

बीज उत्पादन के लिए सुधीर ने कानपुर, दिल्ली के कृषि शिक्षण संस्थाओं के कृषि वैज्ञानिकों से परामर्श लिया। वैज्ञानिकों ने सुधीर को बीज

उत्पादन की पूरी तकनीक सिखाने का भरोसा दिलाया। सुधीर ने 2001 में जबलपुर के कृषि वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में बीज उत्पादन शुरू किया। पहले साल 40 हेक्टेयर में बीज उत्पादन किया। शुरुआत में किसानों ने उनके साथ काम करने से मना कर दिया क्योंकि किसानों को भरोसा नहीं था कि वे बीज उत्पादन में सफल होंगे, लेकिन जब परिणाम उनके अनुकूल आए तो पहले साल 10 किसान उनके सहयोगी बने। आज उनके साथ 800 किसान बीज उत्पादन कर रहे हैं।

वृंदावन में जन्मे सुधीर ने दर्शनशास्त्र में एमए करने के बाद एलएलबी की, लेकिन सरकारी नौकरी या वकालत करने की बजाय खेती को ही अपना रोज़गार बनाया और उसी में अपना करिअर भी। आज उनके बेटे अंकित भी इसी फील्ड में पिता की देखा देखी भविष्य बनाने उतर चुके हैं।

उच्च शिक्षा हासिल करने के बाद भी खेती की ओर रुख करने वाले सुधीर अपने फूफा और मथुरा कोर्ट में वकील रहे दयालकिशन जी के साथ रहकर 5-6 महीनों तक वकालत भी कर चुके हैं। लेकिन बहुत कम समय में ही उनका वकालत से मन उठा गया।सुधीर अग्रवाल के शब्दों में अल्प समय में ही मुझे ग्लानि होने लग गई कि इस मुकदमेबाज़ी के कार्य में तो गरीब आदमी का बहुत शोषण होता है। तब विचार आया कि झूठ बोलने का धंधा है, गरीब आदमी का शोषण है, इसलिए अपने खेतीबाड़ी के काम को करो। इसी बात को ध्यान में रखते हुए मैंने आज़ादी के इतने सालों बाद भी बीज की कमी को देखते हुए आधार-बीज उत्पादन शुरू किया। आज खुश हूँ कि इस काम की वजह से देशभर में पहचान मिली है, ढेरों सम्मान मिले हैं।

जीव-जंतुओं की रक्षा एक आदर्श मानव धर्म

विश्व के अनेक महापुरूष जैसे प्लेटो, आइंस्टीन और महात्मा गांधी शाकाहारी थे, आधुनिक हस्तियों में मैडोना, मार्टिना नवरातिलोवा, मधु सप्रे, रूबी भाटिया, अमिताभ बच्चन, किरण बेदी, शाकाहारी रहे हैं यदि आप भी जियो और जीने दो के सिद्धांत को स्वीकारते हैं तो आज ही शाकाहारी बनें।

मांसाहार त्यागकर आप वर्षभर में लगभग 300 जंतुओं की हत्या को रोकने में सहयोग दे सकते है इस प्रकार आप प्रतिवर्ष 4 एकड़ भूमि में उगने वाले पौधों की बकरियों द्वारा चरे जाने से रक्षा कर सकते है, इस प्रकार आप अपने को कैंसर, हृदयरोग और मोटापा जैसी जानलेवा बीमारियों से भी बचा सकते है।

संसार के सभी धर्म जीव-जंतुओं को संरक्षण देने और उनकी रक्षा करने की बात कहते हैं अत जीव-जंतुओं की रक्षा एक आदर्ष मानव धर्म है, जीव-जंतु पारिस्थितिकी तंत्र की महत्वपूर्ण कड़िया है इनके बिना हमारा प्र्यावरण संतुलित नहीं रह सकता, यदि हम अपने आस-पास के प्राणियों की रक्षा नहीं करेंगे अथवा उन्हें संकट में डालेंगे तो हमारा अपना जीवन भी संकट ग्रस्त हो जायेगा यही सत्य हैं।

प्राणी प्रेमी मेनका गांधी विभिन्न प्रकार से जानवरों की रक्षा में संलग्न रही हैं। देशभर में फैले हुए विषाल नेटवर्क के माध्यम से वह जानवरों की रक्षा में जुटी हैं, प्रस्तुत है उनके द्वारा सुझाए गए प्राणी रक्षा से संबंधित कुछ उपाय जिन्हें अपनाना प्रत्येक संवेदनषील नागरिक का कर्तव्य होना चाहिए, शाकाहार को प्रोत्साहनः मांसाहार त्यागकर वर्षभर में लगभग 300 जंतुओं की हत्या को रोकने में सहयोग दे सकते हैं इस प्रकार आप प्रतिवर्ष 4 एकड़ भूमि में उगने वाले पौधों की बकरियों द्वारा चरे जाने से रक्षा कर सकते है, इस प्रकार आप अपने को कैंसर, हृदयरोग और मोटापा जैसी जानलेवा बीमारियों से भी बचा सकते है।

पेज एक का शेष: किस काम का ये निर्माण : पिस्का मोड़ बैंक आफेसर्स कॉलोनी रोड से होकर नालियों से आने वाले पानी को फिल्टर कर डैम में डालने के लिये बन रहे जलछाजन प्लांट को ठंढे बस्तें में डाल दिया गया। अब यहां बन रही नालियों का पानी वापस सड़क पर ही बह रहा है क्यों कि यह इलाका डेड एंड है। यानि रातू रोड से यहां तक ढलान है और नालियों के पानी के लिये यहां कोई निकासी नहीं है।

यह फिल्टर हाउस बना था, इसमें पानी फिल्टर होना था

बेकार लगी पाइपों की श्रृंखला नवासोसो पूल तक जाती है

कहीं कहीं पाइप जमींदोज हो गये

सन कम्युनिकेशन द्वारा अपोजिट कब्रिस्तान गेट नं.-2 टीवीएस गली रातू रोड, रांची-834001 (झारखंड) से प्रकाशित एवं मैसर्स डी. बी. कॉर्प लिमिटेड,प्लॉट नं535 एवं 1272 ललगुटवा पुलिस स्टेशन रातू, रांची (झारखंड) से मुद्रित। प्रकाशक सह कार्यकारी संपादक : मनोरंजन सिंह, प्रधान संपादक : अभिषेक सिंह, संपादकः मनोज कुमार शर्मा, प्रबंध संपादक : डॉ. मंगला प्रसाद मिश्र, उपसंपादक : महबूब आलम, संपादकीय सलाहकारःमुकेश रंजन सिंह, प्रसार प्रबंधक : इंतेखाब अहमद। आर.एन.आइ. नंबर : JHAHIN00962. email:greenrevolt2019@gmail.com. Ph.8825374626, 8539978825. इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद रांची न्यायालय के अधीन ही होंगे।

चंपारण सचमुच में बना चंपारण

शहरों के नाम के पीछे कोई कहानी होती है। जैसे मधुपुर मधु निकालने वालों की बस्ती के कारण, मुरैना मोर की बहुतायत के कारण बेतिया बेंत के जंगलों के कारण वैसे ही माना जाता है कि बिहार के जिले चंपारण का नाम कभी चंपा फूल के पेड़ों की बहुतायत के कारण पड़ा। केबीसी में करोड़पति बने चंपारण के सुशील कुमार को जब इस बात की जानकारी हुयी तो उन्होंने चंपारण में चंपा फूलों के पेड़ खोजना शुरू किया और इसके न मिलने पर हजारो पेड़ चंपा के लगवा दिये। उनकी ये इच्छा थी कि, चंपारण फिर से अपने नाम को सार्थक करे।

मैंने कहीं पढ़ा था कि चंपारण का असली नाम चंपकारण्य है और यह नाम इसलिए पड़ा कि पहले यहां के वन में चंपा के पेड़ों की बहुतायत हुआ करती थी। मगर चंपारण का वासी होने के बावजूद दो-तीन साल तक मैंने चंपा का कोई पेड़ नहीं देखा था। इस इलाके में कहीं कोई चंपा का पेड़ अमूमन नहीं दिखता था, अगर कहीं दिखा होगा भी तो हम उसे पहचानते नहीं थे। यह बात मुझे बहुत कचोटती थी। इसलिए पिछले साल मेरे दिल में ख्याल आया कि क्यों न चंपारण क्षेत्र को फिर से चंपा के पेड़ों से भरपूर बनाया जाए। इससे इस इलाके का नाम भी सार्थक होगा व क्षेत्र का पर्यावरण भी बेहतर होगा और यह सब शुरू हो गया।

ये सुशील कुमार के शब्द हैं। महज कुछ साल पहले तक अपने इलाके में सुशील की पहचान 2011 में केबीसी के विनर के रूप में थी, जब उन्होंने पाँच करोड़ रुपए जीते थे। मगर अब सुशील चंपा वाले, पीपल और बरगद वाले हो गए हैं।पिछले एक साल में उन्होंने अभियान चला कर बिहार के चंपारण में 70 हजार के करीब चंपा के पौधे लगवाए हैं और आजकल पीपल और बरगद के पेड़ लगवाने के अभियान में जुटे हैं।

चंपारण से ही हुई थी गाँधीजी के सत्याग्रह की शुरूआत

चंपारण वही इलाका है, जहाँ 1917 में महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह की शुरुआत की थी और वहाँ के नील किसानों को अंग्रेजों के अत्याचार से मुक्ति दिलाई थी। अब वह इलाका पूर्वी चंपारण और पश्चिमी चंपारण नामक दो जिलों में बंट गया है, मगर क्षेत्र की पहचान चंपारण नाम से ही होती है। सुशील उसी पूर्वी चंपारण के मुख्य शहर मोतीहारी में रहते हैं और वे लगातार सामाजिक सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़े हैं।

सुशील कुमार के अनुसार उनका यह अभियान विश्व पृथ्वी दिवस के मौके पर 22 अप्रैल, 2018 को शुरू किया था। मोतीहारी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, चंपारण सत्याग्रह समापन समारोह में भाग लेने आए थे। उनके स्वागत में शहर में जोरदार अतिक्रमण हटाओ अभियान चला था, जिससे मोतीहारी की सड़कें खुली, काफी चौड़ी और साफ सुथरी लगने लगी थी। तब उन्होंने सोचा कि क्यों न इन खुली सड़कों के किनारे चंपा के पौधे लगाए जाए। शुरूआत में पूर्वी चंपारण जिले के पांच आइकॉनिक प्लेस पर चंपा का पौधा लगाया गया। फिर सिलसिला शुरू हो गया, लोग इस अभियान से जुड़ने लगे।अभियान को गति 5 जून, 2018 को पर्यावरण दिवस के मौके पर मिली, जब इस अभियान से जुड़े सभी लोगों ने मिलकर एक साथ 21 हजार चंपा के पौधे लगाए।आज मोतीहारी शहर में शायद ही कोई ऐसा घर हो, जहां चंपा का पौधा नहीं लगा होगा, पश्चिम चंपारण के इलाके में भी यह अभियान जोर पकड़ रहा है। हमारा लक्ष्य है कि चंपारण के सभी गाँवों में, सभी टोल्स पर चंपा के पौधे दिखे और इन पौधों को देख कर लोग समझ सके कि चंपारण का नाम आखिर क्यों चंपारण है।''

सुशील पिछले एक साल से लगातार यह अभियान चलाकर लोगों को चंपा के पौधे लगाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। यह पूछने पर कि कितने पौधे लगे, वे कहते हैं, यह बताना मुश्किल है। मगर शहर के दो नर्सरी वाले कहते हैं कि उन्होंने इस दौरान कम से कम 60 हजार पौधे बेचे हैं। इसके अलावा भी कई लोगों ने बाहर से चंपा के पौधे मंगाए हैं, दूसरी नर्सरियों में भी चंपा के पौधे बिके हैं। इससे एक अनुमान पर पहुंचते हैं कि एक साल में कम से कम 70 हजार चंपा के पौधे तो जरूर लगे होंगे।

बिहार केसरी डॉ श्रीकृष्ण सिंह सेवा मंडल में नर्सरी चलाने वाले कृष्णकांत कहते हैं कि उन्होंने दस हजार से अधिक चंपा के पौधे इस अवधि में बेचे हैं। मोतीहारी की गोल्डेन नर्सरी के संचालक मोहम्मद इमामुल गफूर के अनुसार वे पहले इक्का-दुक्का चंपा के पौधे बेचा करते थे, पर पिछले एक साल में उन्होंने 50 हजार से अधिक पौधे बेचे हैं।

महज दो साल पहले तक साल में चंपा के 25-50 पौधे भी नहीं बिकते थे। सुशील ने इसे चंपारण की पहचान के साथ जोड़ कर अचानक इसकी बिक्री बढ़ा दी है।पीपल-बरगद बचाने के लिए भी शुरू किया अभियानतकरीबन एक साल तक ''चंपा से चंपारण'' नामक इस अभियान को चलाने के बाद सुशील ने इस पर्यावरण दिवस को एक नया अभियान शुरू किया है। इस अभियान के बारे में बताते हुए वे कहते हैं, ''पर्यावरण के नजरिये से पौधरोपण अभियान के प्रति लोगों का रुझान तो हाल के वर्षों में खूब बढ़ा है, मगर लोग इस अभियान में भी पीपल और बरगद जैसे विशाल पेड़ों को लगाने से बचते हैं, क्योंकि ये काफी जगह घेरते हैं। जब कि हाल के वर्षों में ऐसे पेड़ तेजी से गायब हो रहे हैं। आने वाले समय में ये पेड़ विलुप्त न हो जाए, इसलिए मैंने इस अभियान को शुरू किया है। उनकी योजना है कि पौधरोपण के बाद वे हर महीने पौधे की हाजिरी ले ताकि यह पता चल सके कि उन्होंने जो पौधा लगाया, वह सूख तो नहीं गया। अगर सूख गया, या किसी पशु ने चर लिया या कोई और दिक्कत हो गई तो उसके बदले में फिर से नया पौधा लगा सके। उनका मानना है कि यह मुमकिन नहीं कि उनके सौ पेड़ लगाने से पर्यावरण सुरक्षित होगा, मगर वे अपना छोटा सा पयास जारी रखेंगे।

फोटो न्यूज

हाल ही में रांची के हिन्दपीढी में एक बच्ची की दुखद मौत खुले नाले में में गिर कर हो गयी । उसके बाद बहुत बवाल हुआ अखबारों में नगर निगम की लापरवाही की खबरें प्रकाशित हुयीं। बाद में ये पता चला कि नगर निगम में जिम्मेवार लोग नालों को ढकने के लिये आवंटित राशि को खर्च करने में कोताही करते हैं। ऊपर की तस्वीर रांची के वार्ड 31 में बन रहे नाले की है। नाला बन रहा है और फिलहाल उसे ढकने का काम भी चल रहा है। कुछ कुछ दूरी पर नाला खुला हुआ है और निर्माण के बाद अगर लापरवाही में इसे यूं ही छोड़ दिया गया तो ये दुर्घटना का कारण बन सकता है?

जान बच गयी : वार्ड 31 में नाले का निर्माण हो रहा है। इस जगह पर नाले की सीध में ये पेड़ आ गया। अब ये मजदूरों और ठेकेदारों की भलमनसाहत रही कि, पेड़ को काटने के बजाये नाले को ही वहां से मोड़ लिया, वर्ना झारखंड में व्यवधान कर रहे पेड़ों को काट डालने की परंपरा रही है। आखिर रांची टाटा रोड हो, रांची गुमला या रांची डाल्टनगंज हजारो पेड़ काट डाले गये हैं।

विदेशी बनाम देशी स्ट्रीट डॉग्स

देखने में सामान्य, ज्यादा रोग प्रतिरोधकता, मजबूत और ज्यादा समझदार और वफादार होती है देशी श्वानों की प्रजाति । इन्हें हम स्ट्रीट डॉग कह कर हिकारत से देखते हैं, पर हकीकत में अगर इन्हें भी ढंग से पाला जाये तो विदेशी नस्ल के कुत्तों से ज्यादा कारगर होते हैं।

बेसहारा कुत्ते को पालतू बनायें: विदेशी नस्लों के कुत्ते न पाले, ऐसी नस्लों के कुत्तें को पालने से आनुवंशिक रूप से कमजोर कुत्तें की आबादी बढ़ती है यदि आप साथी के रूप में किसी कुत्ते को पालना चाहते है तो सड़क के किसी लावारिस भारतीय कुत्ते को पालें, वे भी बहुत प्यारे वफादार और प्राकृतिक रूप से स्वस्थ रहते हैं, उन्हें अधिक देख-रेख की जरूरत नहीं पड़ती, यदि आप ऐसा करते हैं तो आप एक प्राणी की भूख, गर्मी, बीमारी और मृत्यु से रक्षा करेंगे। हाल के कुछ सालों में स्ट्रीट डॉग्स के बंध्याकरण और टीकाकरण का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। तो एक बार इन रोबस्ट देशी डॉग्स को भी पालतू बना कर देखिये।

मांस उत्पादन में बढ़ता प्रतिजैविकों का प्रयोग

खाद्य पदार्थों में मिलावट के खराब प्रचलन से विभिन्न प्रकार के दूषित पदार्थ मनुष्य के शरीर में पहुंच रहे हैं। इससे सामुदायिक स्वास्थ्य के लिए अनेक खतरे उत्पन्न होते हैं, मगर मिलावट करने की प्रवृत्ति इस तरह बढ़ चुकी है कि इससे बच निकलना अत्यंत कठिन हो गया है। मांसाहारी व्यक्ति मांस को भी खाद्य पदार्थ मानते हैं। मांस भी मिलावट से दूर नहीं है। नकली अंडे का मिलना इसी का परिचायक है।

आज का मनुष्य जब भी भोजन करता है, खासकर मांस-हारी व्यक्ति, तो वह अपने भोजन के साथ अनेक हानिकारक और विषाक्त पदार्थों को अंडे या मांस के साथ अपने पेट में डालता रहता है। यह सब कुछ अनजाने में होता है। यद्यपि कुछ लोग जानते भी हैं, मगर उनके सामने शायद कोई विकल्प नहीं होता, शाकाहारी व्यक्तियों का भोजन यहां तक कि दूध भी मिलावट से रंचित नहीं है। यहां दूध में पानी की मिलावट की चर्चा नहीं की जा रही हैं। दूघ में पानी की मिलावट? नहीं, पानी में दूघ की मिलावट होती है, इसलिए चर्चा की आवश्यकता नहीं। यहां तो हम मांसाहारियों के लिए कुछ वैज्ञानिक सत्य की चर्चा करने चले हैं।

सन 1920 में वैज्ञानिकों ने पाया था कि विटामिन ए और डी की आनुपातिक मात्रा से अधिक का प्रयोग करके अंडों का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। विशेष कर ब्रायलर प्रजाति की मुर्गियों से। उन अंडों से यदि चूजों का उत्पादन करना हो तो मुर्गी फार्मों में आसानी से चूजों की आबादी बढ़ाकर अधिक धन कमाया जा सकता है। इस तरह अंडों और चूजों का उत्पादन कम लागत में बढ़ाकर अच्छा व्यापार चलाया जा सकता है। 1940 में थॉमस जूक के अनुसंधानों से पता चला कि प्रति जैविक (एंटीबायोटिक्स) को यदि मुर्गियों के भोजन में मिलाया जाये, तो ऐसा भोजन खाने से वे तेजी से बढ़ेंगी। मुर्गी विक्रेताओं और फार्म मालिकों को मुंहमांगी मुराद मिल गयी।

आज धड़ल्ले से मुर्गी या कुक्कुट आहार में प्रतिजैविक मिलाये जा रहे हैं। यह काम कुक्कुट फीड बेचनेवाली कंपनियां स्वयं कर देती हैं। कुक्कुट विक्रेताओं को जहमत मोल लेने की जरूरत ही नहीं पड़ती। देखा-देखी डेयरी मालिकों ने गायों-भैंसों और सुअर पालने वालों ने इन पशुओं के भोजन में भी प्रतिजैविक मिलाने प्रारंभ कर दिये। सन् 1950-60 में पशु वैज्ञानिकों ने शोध किया कि कुछ हार्मोन ऐसे हैं जिनसे पशुओं और कुक्कुटों की संतानोत्पत्ति की क्षमता बढ़ जाती है। कुछ नये हार्मोन संश्लेषित भी किये गये। तबसे ये हार्मोन भी पशुओं और कुक्कुटों के चारों में शामिल किये जाने लगे। दूध उत्पादन को प्रेरित करने के लिए गैरकानूनी ढंग से 'आक्सिटोसिन' हार्मोन का प्रचलन बढ़ा। इस हार्मोपन की सुई को बेरहमी से गाय या भैंस के थन में घोंप दिया जाता। थोड़ी देर बाद अपनी इस कृत्रिम व्यवस्था से गाय या भैंस से दूध प्राप्त कर लिया जाता है। यह हार्मोन कौन बनाकर डेयरी फार्मो से भेजता है, इसकी जानकारी पाना आम आदमी के बूते की बात नहीं। केवल संबंधित व्यक्ति ही एक-दूसरे को जानते हैं और उनलोगों की बातचीत की भाषा भी 'कोडेड' होती है-खग जाने खग की भाषा।

खनन और वृक्षों की कटाई से उजाड़ हो चुके पिपलांत्री गांव की सूरत श्याम सुंदर पालीवाल ने सरपंच बनते ही बदल दी

डेनमार्क के स्कूलों में होती है राजस्थान के गांव पिपलांत्री की चर्चा

❀उदयपुर से 71 किमी दूर एक गांव ऐसा है जो राजस्थान के अन्य गांवों से उलट है और कई मामलों में देश के तमाम गांवों के लिए एक मिसाल भी है।

❀राजसमंद जिले में बसे पिपलांत्री नाम के इस गाँव को 'आदर्श ग्राम', 'निर्मल गाँव', 'पर्यटन ग्राम', 'जल ग्राम', वृक्ष ग्राम', कन्या ग्राम', राखी ग्राम' जैसे विविध उपमाओं के साथ देशभर में पहचाना जाता है। इस गाँव पर सैकड़ों डॉक्यूमेंट्रीज फिल्में बनी हैं।

❀खनन, पेड़ों की कटाई और जल की कमी से जूझ रहे गांव को सरपंच श्याम सुन्दर पालीवाल ने बदल डाला। अब राजस्थान के कक्षा सात व आठ की सरकारी पुस्तकों में पिपलांत्री को पाठ के रूप में पढ़ाया जा रहा है तो डेनमार्क के प्राइमरी स्कूलों में इसके उदाहरण दिए जाते हैं।

वृक्षारोपण के बाद पिपलांत्री।

करीब दो हजार की आबादी वाले इस गाँव के बदलाव की कहानी 2005 के बाद से शुरू होती है जब श्याम सुन्दर पालीवाल यहां के सरपंच बने। हालांकि पिपलांत्री पहले भी खूबसूरत हुआ करता था लेकिन मार्बल खनन क्षेत्र में बसे होने के चलते यहाँ की पहाड़ियां खोद दी गई, पानी पाताल में चला गया और प्रकृति के नाम पर कुछ भी नहीं बचा। ऐसे में श्याम सुन्दर ने अपने गाँव की वन संपदाओं को नष्ट होते देख मुंह फेरकर निकल जाने की बजाय इन पहाड़ियों पर हरियाली की चादर ओढ़ाने की कसम खाई। उनके इसी संकल्प के चलते आज 15 साल बाद पिपलांत्री देश के उन चुनिंदा गाँवों की सूची में सबसे अव्वल नंबर पर आता है, जहाँ कुछ नया हुआ है।जल को जगदीश मानने वाले श्याम सुंदर ने दूर-दराज की ढाणियों, खेड़ों में बसे गांवों के अधिकतर खेतिहर व मार्बल खान मजदूरों और अ-शिक्षित ग्रामीणों की समस्याओं के निवारण के लिए वाटरशैड योजना को सही ढंग से लागू किया। जिससे पहाड़ी नालों के कारण होने वाले उपजाऊ मिट्टी के कटाव को रोकने में मदद मिली। इस पंचायत में 7 राजस्व गाँव के अलावा 17 ढाणियां और खेड़ें भी हैं। एक वक्त था जब इसे गाँव की पहाड़ियां हरियाली और सुंदरता में कश्मीर की वादियों जैसी थी। आमजन के लालच, अंधाधुंध वनौषधियों के संग्रहण, वनों द्वारा प्राप्त उपज के अतिदोहन, इमारती लकड़ी की कटाई और बेतरतीब ढंग से मार्बल खानों की खुदाई, अनियंत्रित पशु चराई के कारण यह पहाड़ियां खाली होती चली गई। ऐसा माना जाता है कि कड़े से कड़े कानून भी इस तरह के प्राकृतिक विनाश को रोकने में कारगर साबित नहीं हो सकते।

श्याम सुन्दर ने ग्राम पंचायत स्तर पर जनजागृति के माध्यम से जल संरक्षण, मृदा संरक्षण, ग्राम स्वच्छता, बालिका शिक्षा और स्वास्थ्य सुरक्षा जैसे मुद्दों के साथ ही हर साल पौधारोपण करवाते हुए ग्रामीणों की भावनात्मक प्रतिबद्धता के साथ पौधों की सुरक्षा के भी पुख़्ता इंतजाम किए। इन्होंने सरकारी योजनाओं की पूरी जानकारी जुट-ाकर एक-एक ढाणी के विकास के लिए कोशिशें जारी रखी। शुरुआती दौर में कुछ स्वार्थी लोगों ने कठिनाइयां भी खड़ी कीं लेकिन चंद लोगों ने साथ दिया,और गांव का कायाकल्प कर दिया।

E ZONE CARE

Software Problem, Motherboard Chip-Level Repair, Laptop AC Adapter Repair and Replacement, Laptop LCD Screens Repair and Replacement, Dead Laptop Problems, No Display Problem, LCD Dim Display Problem, LCD White Display Problem, BIOS Password Problem, all type of Laptop repair and service

• Repair your laptop with 3-month warranty
info@ezonecare.in, ezonecare.in
Rospa Tower 3RD Floor, Main Road, ranchi
93108 96575, 70047 69511 Mon - Fri 10:30 am - 7:00 pm
SunDAY Closed